॥ सर्वजन सर्व देवता पूजा पद्धति ॥

॥ पारायण श्लोक ॥

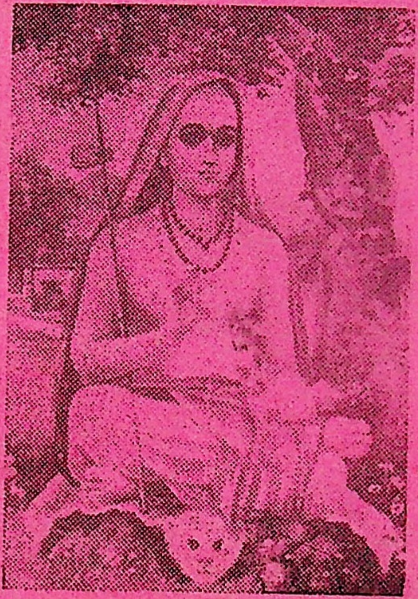

श्री काञ्ची कामकोटि पीठाधिपति जगद्गुरु शङ्कराचार्य
श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामिभ्यः समर्पितम्

प्रातः स्मरणीय श्लोक

१. कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गौरी स्यात् प्रभाते करदर्शनम् ।।

२. समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

३. अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
पञ्च कन्या: स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ।।

४. पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिर: ।
पुण्यश्लोको च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दन: ।।

५. कार्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या: नलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षे: कीर्तनं कलिनाशनम् ।।

६. अश्वत्थामा बलिर्व्यास: हनुमांश्च विभीषण: ।
कृप: परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविन: ।।

७. ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकश्च भानु:शशि भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रश्शनिराहुकेतव: कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम् ।।

८. भृगुर्वसिष्ठ: क्रतुरङ्गिराश्च मनु: पुलस्त्य: पुलहश्च गौतम: ।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनोऽथदक्ष: कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम् ।।

९. सनत्कुमारश्च सनन्दनश्च सनातनोऽप्यासुरिसिंहलौ च ।
सप्तस्वरास्सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वेममसुप्रभातम् ।।

१०. सप्तार्णवास्सप्त कुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादिलोकाः भुवनानि सप्त,
कुर्वन्तु सर्वे ममसुप्रभातम् ।।

११. पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथाऽऽपः,
स्पर्शश्च वायुर्ज्वलितं च तेजः ।
नभस्सशब्दं महता सहैव,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

१२. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

स्नानारंभ के समय पठनीय श्लोक

१३. अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

१४. गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

१५. गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः विष्णुलोकं स गच्छति ।।

भोजन के समय पठनीय श्लोक

१६. अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।

१७. अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रित ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्न चतुर्विधम् ।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातऽन्नपूर्णेश्वरी ।

घर से बाहर चलते समय के स्मरणीय श्लोक

१८. वनमाली गदी शाङ्‌र्गी शङ्‌खी चक्री च नन्दकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ।।

शयन के पूर्व स्मरणीय श्लोक

१९. अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः ।
कपिलो मुनिरस्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ।।

२०. अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सोमं जनार्दनम् ।
हंसं नारायणं कृष्णं जपेत् दुःस्वप्नशान्तये ।।

२१. ब्रह्माणं शङ्करं विष्णुं यमं रामं दनुं बलिम् ।
सप्तैतान् यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ।।

१. सर्वजन सर्व देवता पूजा पद्धति

संसार में कई प्रकार के प्राणी होते हैं। उनमें मनुष्य रूपी प्राणी सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पूर्व कर्म के पुण्य प्रताप से मनुष्य-जन्म प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपना समय व्यर्थ न गंवाए और अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को ऐसा संवारे कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नाम के चतुर्विध फल पुरुषार्थों को प्राप्त करके अपने जीवन को कृतार्थ करें। ईश्वर ने मनुष्य को जन्म से ही बुद्धि, हाथ, मुंह और पैर जैसे ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय प्रदान किए हैं। इनका सदुपयोग करना हर मनुष्य का कर्त्तव्य है। ईश्वर की आराधना और पूजा-पाठ करने का सुयोग प्राप्त होता है। हम देखते हैं कि ईश्वर की दृष्टि में मनुष्य के अलावा भी कितने ही प्राणी होते हैं। उनके भी हाथ, पैर, मुंह जैसे अवयव होते हैं। वे

अपने हाथों की मदद से खा सकते सकते हैं, पैरों की मदद से चल फिर सकते हैं और मुंह की मदद से आवाज निकाल सकते हैं, पर न मुंह से ईश्वर का नाम ले सकते है और न हाथों से उसकी पूजा या अर्चना ही कर सकते हैं।

परब्रह्म रूप भगवान ही एक ऐसे हैं जो परिपूर्ण और परमानन्दमय है। उन्हें अपने सुख-दुख की आंख-मिचौली नहीं खेलनी पड़ती। पर सुख-दुख की आंख मिचौली खेलने-वाला मनुष्य चाहता है कि उसे सुख पर सुख प्राप्त होता रहे इसलिए उसे चाहिए कि परमसुखमय भगवान की अराधना करें। इस प्रकार देखा जाए तो ईश्वर की उपासना हर मनुष्य के जीवन का अंग हो जाती है।

ईश्वर की अराधना अपने ही नहीं, ग्राम, नगर देश, और समूचे लोक के कल्याण के लिए आवश्यक है। सार्वजनिक मन्दिरों में भगवान की अराधना अर्चक-पुजारियों के द्वारा की जानी चाहिए। पर व्यक्ति-विशेष के घरों में विशिष्ट पूजा-स्थल में बैठकर देवता-पूजन व्यक्तिगत रूप से करना चाहिए।

हमारे हिन्दू समाज में निराकार-निर्गुण-ब्रह्म को साकार-सगुण रूप देकर पूजने की प्रथा प्रचलित हो गयी है। इसलिए कि सगुण-सरूप की पूजा सुलभ और सुगम है। इस सिलसिले में विभिन्न मूर्त्तियों की पूजा का प्रचलन भी हो गया। इस सगुण उपासना से ऐहिक सुख ही क्यों, पारमार्थिक सुख भी प्राप्त हो सकता है।

अराधना का दूसरा नाम पूजा-पाठ और उपासना भी होता है। यह पूजा भी दो प्रकार की होती है। एक बाह्य पूजा और दूसरी आंतरिक या मानसिक पूजा। बाह्य पूजा के लिए पूजा-सामग्री की जरूरत होती है।

पर आंतरिक या मानसिक पूजा के लिए मनोभावना मात्र पर्याप्त है। प्रत्यक्ष रूप से पूजा सामग्री की जरूरत नहीं पड़ती। मानसिक पूजा जरा कठिन होती है। इसलिए पारिवारिक गृहस्थों के लिए बाह्य पूजा का विधान है। बाह्य पूजा में आराध्य वस्तु मूर्त प्रतिमा या चित्र रूप में हो सकती है।

तीर्थ पात्र में थोड़ा जल, पुष्प, चंदन, अक्षत-रोली, यथा संभव दूध, नैवेद्य के लिए गुड़, द्राखा फल और महानैवेद्य के रूप में अन्न-इनका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

पूजा करने वाले गृहस्थ को चाहिए कि पूरब या उत्तर की ओर मुंह करके बैठे ताकि आराध्य मूर्ति का मुख उसकी ओर रहे। याने मूर्ति का मुंह दक्षिण या पश्चिम की ओर रहे।

जहां तक हो सके, रोज सिर से नहा लेना अच्छा है। विवशता की हालत में कंठ तक स्नान करना काफ़ी होता है। स्नान के उपरांत अपने रीति रिवाज के अनुसार भस्म, सिंदूर या चंदन का तिलक धारण करके उपरोक्त पूजा सामग्रियों के साथ पूजा के लिए बैठना चाहिए।

भगवान के सामने अपने आसन पर बैठने के बाद आचमन करना चाहिए। 'केशवाय स्वाहा, नारायणाय स्वाहा, माधवाय स्वाहा' कहकर तीन बार हथेली में थोड़ा पानी लेकर पीना आचकन कहा जाता है।

पूजक को चाहिए कि पद्मासन लगाकर बैठे। फिर दायें घुटने पर बायें हाथ की हथेली उन्मुख रखकर उस पर दायीं हथेली का ढक्कन जैसा बना ले और संकल्प करे।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षय द्वारा
श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम्...

कहने के बाद अपने आराध्य देवता का नाम ले। जैसे श्री कृष्णस्वामी प्रसाद सिद्ध्यर्थम्, श्री सुब्रह्मण्य स्वामी प्रसाद सिद्ध्यर्थम्।

इष्ट काम्यार्थं सिद्ध्यर्थम्,
साम्राज्य सिद्ध्यर्थम्।

यहां पर अपने आराध्य देवता का नाम लेकर 'आराधनं करिष्ये' कहे। इसके बाद थोड़ा पानी लेकर हाथ पोंछे। फिर तीर्थ पात्र के जल में फूल भिगोकर उस सजल फूल से पूजा-द्रव्यों, आराध्य देवता और अपने ऊपर छिड़क लें। तदुपरांत हाथ में अक्षत-रोली और फूल लेकर 'षोड़शोपचार पूजां करिष्ये' कहकर पूजा का प्रारंभ करें।

आगच्छ देवदेवेश मर्त्यलोक हितेच्छया।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नस्सुमुखो भव॥

आराध्य देवता से पधारने की प्रार्थना करना इस श्लोक का ध्येय है।

पादासनं कुरु प्राज्ञ निर्मलं स्वर्णनिर्मितम्।
भूषितं विविधैः रत्नैः कुरु त्वं पादुकासनम्॥

आसनं समर्पयामिः कहकर आराध्य देवता पर अक्षत-रोली डाले।

गंगादिभ्यः सुतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम॥

पाद्यं समर्पयामिः कहकर पाद-प्रक्षालन के तौर पर थोड़ा पानी दें।

गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना ।
अर्घ्यं गृहाण देवेश भक्ति मे अचलां कुरु ॥

अर्घ्य समर्पयामि: कहकर अर्घ्यं दे ।

कर्पूरोशीर सुरभि शीतलं विमलं जलम् ।
गंगायास्तु समानीतं गृहाणाचमनीयकम् ॥

आचमनीयं समर्पयामि: कहकर आचमन के वास्ते थोड़ा पानी दे ।

मन्दाकिन्यास्समानीतं हेमाम्भोरुह वासितम् ।
स्नानाय ते मया भक्त्या नीरं स्वीक्रियतां विभो ॥

स्नाणं समर्पयामि: कहकर थोड़ा पानी आराध्य देवता पर छिड़के ।

इस समय जल, दूध, दही, मधु, पंच गव्य, फल रस आदि से भी अपनी शक्ति के अनुसार भगवान का अभिषेक किया जा सकता है। आराध्य देवता यदि चित्र रूप में हो तो छिड़कना पर्याप्त है ।

वस्त्रं सूक्ष्मं दुकूलं च देवानामपि दुर्लभम् ।
गृहाण त्वं प्रभो देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

वस्त्रं समर्पयामि: कहकर अक्षत डाले ।

यज्ञोपवीतं सहजं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
आयुष्वं देव वर्चस्यं उपवीतं गृहाण भो ॥

जनेऊ पहनाये। नहीं तो उसके स्थान पर अक्षत डाले ।

श्रीखण्डं चन्दनं रिव्यं गन्धाढ्‌ढयं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ मद्दतं प्रतिगृह्यताम् ॥

कहकर चन्दन का तिलक लगाये ।

अक्षतान् चन्द्रवर्णाभाञ्शालेयान्सलिलान् शुभान् ।
अलंकारार्थमानीतान्धारयस्व महाप्रभो ॥

आराधना की मूर्ति को अक्षत से सजाये ।

इसके बाद अपनी सुविधा के अनुसार अष्ठोत्तरशत नामावलि या सहस्रनामावलि से भगवान की अर्चना कर सकते हैं। नाम लेते वक्त हर बार भगवान पर एक-एक फूल चढ़ाना चाहिए। सुविधा या समय के अभाव में आराध्य देवता का नाम आठ बार लेकर फूल चढ़ाया जा सकता है।

वनस्पति रसोद्भूत: गन्धाढ्य: सुमनोहर: ।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

धूपं समर्पयामि: कहकर धूप दिखाये ।

साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥

दीपं समर्पयामि: कहकर दीपाराधना करे ।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्ति मय्यचलां कुरु ।
मयेप्सितं वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

नैवेद्यं समर्पयामि: कहकर दूध, फल, जल, और अन्न का निवेदन करे ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्या दलैर्युतम् ।
कर्पूर चूर्णसंयुक्त तांबूलं प्रतिगृह्याम् ॥

तांबूलम् समर्पयामि: कहकर पान सुपारी का निवेदन करे ।

सक्षुद्रं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कलिप्तं भवत्या गृहाण त्वं सुरेश्वर ॥

नीराजनं समर्पयामि: कहकर कर्पूर की आरती उतारे ।

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात्फल प्रदानेन सफलाश्च मनोरथा: ॥

कहकर मंत्र पुष्प चढ़ाये ।

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

कहकर तीन बार देवता की परिक्रमा करे और आराधना की मूर्ति पर पुष्प और अक्षत चढ़ाये ।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तु ते ।
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयं इति मां मत्वा क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥

कहकर नमस्कार करे ।

उसके बाद छत्रं धारयामि, चामरं वीजयामि, नृत्यं नर्तयामि, वाद्यं घोषयामि, आंदोलिकां आरोहयामि, समस्त भक्त्योपचार, राजोपचार, शक्त्योपचार पूजां समर्पयामि कहकर पुष्प और अक्षत से आराध्य की पूजा करे। उसके बाद 'अनन पूजनेन भगवान.. सुप्रसन्नो भवतु । भगवत्प्रसाद सिद्धिरस्तु' कहकर अक्षत-फूल पानी के साथ भगवान के सामने समर्पित करे। पूजा के अंत में, प्रारंभ में कहे अनुसार आचमन करे।

२. पारायण श्लोक

१. शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

२. मूषिकवाहन मोदकहस्त चामरकर्ण विलंबित सूत्र ।
वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायक पाद नमस्ते ॥

३. अगजानन पद्मार्कं गजाननमहर्निशम् ।
अनेकदं तं भक्तानां एकदन्तमुपास्महे ॥

४. गजाननं भूतगणादिसेवितं,
कपित्थजम्बूफलसार भक्षितम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

५. वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

६. मयूराधिरूढं महावाक्यगूढं,
मनोहारि देहं महच्चित्तगेहम् ।
महीदेवदेवं महावेदभावं
महादेवबालं भजे लोकपालम् ॥

७. अपस्मार कुष्ठक्षयार्शः प्रमेह
ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः ।
पिशाचाश्च सर्वे भवत्पत्रभूतिं
विलोक्य क्षणात्तारकारे द्रवन्ते ।

८. ब्रह्ममुरारि सुरार्चितलिङ्गं निर्मल भासित शोभितलिङ्गम् ।
जन्मः दुख विनाशकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥

९. करचणकृतं वा कर्मं वाक्कायजं वा

श्रवणनयनजं वा मानस वाऽपराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व

शिवशिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥

१०. नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमश्शिवाय ॥

११. मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय ।
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।।
मन्दार मुख्यबहुपुष्पसु पूजिताय ।
तस्मै मकाराय नमश्शिवाय ॥

१२. शिवाय गौरीवदनारविन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमश्शिवाय ॥

१३. वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमादि मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्कं वैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमश्शिवाय ॥

१४. यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराम तस्मै यकाराय नमश्शिवाय ॥

१५ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ॥

१६. मेघश्यामं पीतकौशेयवासं
श्रीवत्साङ्गम् कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैक नाथम् ॥

१७. सशङ्कचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्थल शोभि कौस्तुभं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

१८. आपदहतामपारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

१९. आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भीतिनाशनम् ।
द्विषतां कालदंडं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ॥

२०. रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

२१. अग्रतः पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्च महाबलौ ।

आकर्णपूर्ण धन्वानौ रक्षेतां रामलक्ष्मणौ ॥
२२. करारविन्देन पदारविन्दं
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥
२३. वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम ॥
२४. नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी ।
निर्धूताखिल घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ॥
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षांदेहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥
२५. अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥
२६. अयिगिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनी भूरिकृते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥
२७. सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥
२८. सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
२९. सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारंभं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा ॥
३०. चतुर्भुजे चन्द्र कलावतंसे कुचोन्नते कुंकुमरागशोणे ।

पुण्ड्रेक्षु पाशाङ्कुश पुष्पबाण हस्ते नमस्ते जगदेक मात: ।।

३१. दूरीकृत सीतार्ति: प्रकटीकृत रामवैभव स्फूर्ति: ।
दारित दशमुख कीर्ति: पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्ति: ।।

३२. बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता ।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनूमत्स्मरणाद्भवेत् ।।

३३. जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।

३४. दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।

३५. धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति सकप्रथम् ।
कुकारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणकाम्यहम् ।।

३६. प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम् ।
सोम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।

३७. देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन सन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।

३८. हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।

३९. नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।

४०. अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिका गर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।

४१. पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

४२. श्रुतिस्मृति पुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ।।

४३. विदिताखिल शास्त्र सुधाजलधे,
महितोपनिषत्कथितार्थनिधे ।
हृदये कलये विमलं चरणं,
भव शंकर देशिक मे शरणम् ।।

४४. करुणावरुणालय पालय मां,
भवसागर दुःख विदून हृदम् ।
रचयाखिल दर्शन तत्वविद,
भव शंकर देशिक में शरणणम् ।।

४५. भवता जनता सुहिता भविता
निजबोध विचारण चारुमते ।
कलयेश्वर जीव विवेकविदं,
भव शंकर देशिक म शरणम् ।।

४६. भव एव भवानिति में नितरां,
समजायत चेतसि कौतुकिता ।
मम वारय मोह महाजलधिं,
भव शंकर देशिक मे शरणम् ।।

४७. आदौ देवकिदेवि गर्भजननं गोपीगृहे वर्धनं
मायापूतन जीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ।
कंशच्छेदन कौरवादि हननं कुन्ती सुतोपालनं
ह्येतद्भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ।।

श्रीशङ्कराचार्यविरचितं गङ्गास्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गङ्गे, त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे ।
शङ्करमौलिनिवासिनि विमले, मम मतिरास्तां तव पदकमले ।।
भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।

नाहं जाने तव महिमानं, त्राहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥
हरिपदपद्यविहारिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं, कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥
तव जलममलं येन निपीतं, परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः, किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे, खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे ।
भीष्मजननि खलु मुनिवरकन्ये, पतितोद्धारिणि त्रिभुवनधन्ये ॥
कल्पलतामिव फलदां लोके, प्रणमित यस्त्वां न पतति शोके ।
पारावारविहारिणि गङ्गे, वुधवनिता कृततरलापाङ्गे ॥
तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः, पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
यमभयवाग्णि जाह्नवि गङ्गे, कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे ॥
परिलसदङ्गे, पुण्यतरङ्गे, जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे ।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे सेवकशरणे ॥
रोगं शोकं तापं पापं, हर मे भगवति कुमतिकलापम् ।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे, त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥
अलकानन्दे परमानन्दे कुरु मयि करुणां कातर-वन्द्ये ।
तव तटनिकटे यस्य निवासः, खलु, वैकुण्ठे तस्य हि वासः ॥
वरमिह नीरे कमठो मीनः, किंवा तीरे सरटः क्षीणः ।
अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव नहि दूरे नृपतिकुलीनः ॥
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये, देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
गङ्गास्तवमिमममलं नित्यं, पठित नरो यः स जयति सत्यम् ॥
येषां हृदये गंगाभक्तिः, तेषां भवति सदासुखमुक्तिः ।
मधुरमनोरमपज्झटिकाभिः; परमानन्दकलितललिताभिः ॥
गङ्गास्तोत्रमिदं भवसारं, वाञ्छितफलदं बिगलितभारम् ।
शङ्कर-सेवक-शङ्कररचितं, पठतु च विषयीदमिति समाप्तम् ॥